Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 3, Issue 2 - 2018

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में विकास एवं रोजगार की स्थिति एवं संभावनाएं

मीरा यादव*, डॉ. आर. के. दीक्षित**

शोधसार

विकासशील भारतीय अर्थव्यवस्था में अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय कृषि है| वर्तमान में लगभग 55% जनसंख्या कृषि में संलग्न है परन्तु राष्ट्रीय आय में यह क्षेत्र लगभग 14% ही योगदान करता है| तीव्र आर्थिक विकास के लिए कृषि के साथ - साथ उद्योगों का भी विकास आवश्यक है| खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि आधारित उद्योग है एवं इन उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है| खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि विकास दर जो की 4% है, से अधिक 8% की दर से बढ़ रही है| भारत में कृषि उत्पादों का निर्यात 2016-17 में 1,68,435.51 मिलियन टन 2017-2018 में 1,57,618.05 मिलियन टन व 2018-2019 में बढ़कर 2,25,152.50 मिलियन टन हो गया है, जिसका मूल्य क्रमश: 2016 -17 मे 39563.56 लाख रुपये, 2017-18 में 37369.69 लाख रुपये व 2018-19 में 55,424.04 लाख रुपये हो गया है|

प्रस्तावना

भारत में विभिन्न फसलों का उत्पादन प्रचुर मात्र में होता है| दूध, घी, अदरक, पपीता, केला, अमरुद और आम आदि फलों के उत्पादन में भारत का पहला स्थान है| सब्जियों के क्षेत्र में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है अनाजों में चावल, गेंहू एवं दालों के उत्पादन में भी दूसरा स्थान प्राप्त है| देश में मजबूत कृषि आधार के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है| खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के अंतर्गत प्राथमिक कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण कर उनका मूल्यवर्धन किया जाता है एवं उन्हें लम्बे समय तक प्रसंस्करण द्वारा संरक्षित किया जाता है|भारत के खाद्य प्रसंस्करण में अनाज प्रसंस्करण,फल और सब्जियां,दूध और दूध से बनने वाले उत्पाद, मसाले, मदिरा, मांस एवं पोल्ट्री, बेकरी उत्पाद, सॉफ्ट ड्रिंक्स मिनरल जल, उच्च प्रोटीन वाले खाद्य उत्पाद आदि शामिल है|

भारतीय खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र उत्पादन, वृद्धि, रोजगार, निवेश, उपभोग एवं निर्यात की दृष्टि से सबसे बड़ा क्षेत्र है| वर्ष 2018-19 के दौरान भारत का प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात 31111.90 करोड़ रूपये था, जिसमें आम का गूदा (657.67 करोड़ रुपये), प्रसंस्कृत सब्जियां (2473.99 करोड़ रूपये), खीरा एवं ककड़ी (सूखी एवं संरक्षित) (1436.08 करोड़ रूपये), प्रसंस्कृत फल, जूस और मेवे (2804 .97 करोड़ रुपये), मूंगफली (3298.33 करोड़ रुपये), कोको उत्पाद (1350.86 करोड़ रुपये),

*शोध छात्रा-अर्थशास्त्र विभाग, सी.एस. जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर|
*एसो. प्रोफे. एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग ,पी.पी.एन. कॉलेज, कानपुर|
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

अनाज निर्मित उत्पाद (3859.37 करोड़ रुपये), मादक पेय (2103.97 करोड़ रुपये), दालें (1680.18 करोड़ रुपये), ग्वारगम (4707.05 करोड़ रुपये) विविध निर्मित उत्पाद (4072 .98 करोड़ रूपये और मिल के उत्पाद (1060.13 करोड़ रूपये) आदि शामिल थे|

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की वर्तमान स्थिति का अन्वेषण करना|
2. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में रोजगार, उत्पादन एवं विकास दर का अध्ययन करना|
3. प्रसंस्करण उद्योग के विकास की भावी संभावनाओं का अध्ययन करना|
4. प्रसंस्करण उद्योग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना|

शोध-विधि

प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान पर आधारित है तथा इस शोध पत्र में केवन द्वितीयक समंको को लिया गया है| ये समंक प्रमुख रूप से MOFPI, ASI व अन्य वेबसाइटस से लिए गये है|

तालिका द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण

तालिका 1

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के उपक्षेत्रों में रोजगार, उत्पादन एवं निवेश सम्बन्धी आंकड़े (करोड़ में)								
कोड (4 डिजिट NIC, Code - 2008)	**मद**	**फैक्ट्रियों की संख्या**	**कार्यरत व्यक्तियों की संख्या**	**कुल आउटपुट**	**अचल पूंजी (FC)**	**जी वी ए**	**अचल पूंजी प्रति कारखाना**	**GVA%**
1010	मांस का प्रसंस्करण एवं संरक्षण	181	29812	24846	2794	1758	15.43	7.62
1020	मछली का प्रसंस्करण एवं संरक्षण	535	70298	38388	4502	3411	8.41	9.75
1030	फल एवं सब्जियों का प्रसंस्करण एवं संरक्षण	1254	80440	21830	8108	4759	6.47	27.88
1040	सब्जी एवं जंतु तेल एवं वसा	3112	97888	204537	17890	7705	5.75	3.91
1050	डेयरी उत्पादों का निर्माण	2039	171497	153260	22429	12491	6.87	10.01
1061	अनाज चक्की वाले उत्पादों का निर्माण	18899	345200	253775	22769	17975	0.98	8.62

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

1062	स्टार्च और स्टार्च उत्पादों का निर्माण	629	27352	11266	5100	1570	8.11	16.19
1071	बेकरी उत्पादों का निर्माण	1767	113043	25704	5955	5459	3.37	26.96
1072	चीनी का निर्माण	741	227890	100672	62505	17296	84.35	20.74
1073	कोको, चॉकलेटो व मिष्ठान का निर्माण	594	46253	17898	8572	4508	14.43	33.67
1074	मैक्रोनी, नूडल्स व अन्य आटे के उत्पादों अक निर्माण	118	10048	3267	2224	750	18.85	29.79
1079	अन्य खाद्य उत्पादों का निर्माण	6300	387742	111557	22749	18186	3.61	19.48
1102	वाइन का निर्माण	77	6981	3359	833	837	10.81	33.19
1103	माल्ट शराब और माल्ट का निर्माण	123	29471	12303	6145	2884	49.96	30.61
1104	सॉफ्ट ड्रिंक्स का निर्माण,खनिज जल व बोतलों में बंद पानी	1658	65903	25955	12859	7495	7.76	40.6
Source: ASI data-2016-17	**Total**	38027	1709818	1008617	192575	107084	-	-

तालिका -1 का स्पष्टीकरण Table-I में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के प्रमुख क्षेत्रों में कुल कारखानों की संख्या, रोजगार, कुल उत्पादन, स्थिर पूँजी व जीवीए को दर्शाया गया है| कुल कारखानों की संख्या 38027 है जिनमें 1709818 लोगों को रोजगार प्राप्त है, उत्पाद प्रसंस्करण उद्योग में अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक रोजगार है इस क्षेत्र में अधिकांश फैक्ट्रियाँ सूक्ष्म, मध्यम व लघु आकार की है| 2016-17 के एएसआई आंकड़ो के अनुसार, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के प्रमुख १५ उद्योगों में कुल उत्पादन 1008617 व् कुल अचल पूंजी 192575 करोड़ रूपये थी|

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

तालिका 2

कुल उद्योगों में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का हिस्सा			
क्षेत्र	**खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र**	**समग्र उद्योग**	**खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का हिस्सा (% में)**
पंजीकृत **(2016-17)**	18.54 लाख	149.11 लाख	12.43
गैर निगमित **(2015-16)**	51.11 लाख	360.41 लाख	14.18

तालिका -2 से स्पस्ट है कि समग्र उद्योग में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान है| पंजीकृत प्रसंस्करण उद्योग का कुल उद्योग में हिस्सा 12.43 % है तथा अपंजीकृत क्षेत्र का हिस्सा 14.18% है अतः स्पष्ट है की गैर-निगमित क्षेत्रों में पंजीकृत क्षेत्र की अपेक्षा अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है|

तालिका 3

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में रोजगार की स्थिति (लाख में)	
2009-10	16.06
2010-11	16.62
2011-12	17.77
2012-13	16.89
2013-14	17.41
2014-15	17.73
2015-16	17.65
2016-17	18.54

Source: mofpI website

तालिका 3 से स्पस्ट है कि प्रसंस्करण उद्योग में रोजगार में वृद्धि हो रही है 2009-10 में 16.06 लाख व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था जो 2015-16 में बढकर 17. 65 % व 2016-17 में बढकर 18 .54% हो गया है|

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में आने वाली बाधाएं

भारतीय कृषि के अधिकांश भाग में अज भी परम्परागत तरीके से कृषि कार्य किया जाता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अज भी भंडारण, विपणन, परिवहन व् प्रसंस्करण की अपर्याप्त सुविधाओं के कारण प्रतिवर्ष लगभग 40 % खाद्यान बर्बाद हो जाता है| शीघ्र ख़राब हो जाने वाले उत्पाद जैसे फल, सब्जियां ,दुग्ध उत्पाद आदि, उत्पादन व प्रसंस्करण के बीच अपर्याप्त संबंध के कारण बर्बाद हो जाते हैं| विभिन्न खाद्यान्नो के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त होने के बाद भी अपर्याप्त आधारभूत संरचना (भंडारण, विपणन, आरंभिक प्रसंस्करण), नवाचार की कमी गुणवत्ता व सुरक्षा मानकों पर अपर्याप्त ध्यान आदि के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में विकास की दर, इसकी क्षमता से कम है| तालिका 4 में सिफेट की 2015 की रिपोर्ट के अनुसार ,अधिक हानि वाली फसलों का प्रतिशत दर्शाया गया है|

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

तालिका 4

विभिन्न फसलें	**वर्ष 2015 की रिपोर्ट के अनुसार अनुमानित हानि % में**
गेंहू	4.93
धान	5.53
बाजरा	5.23
मक्का	4.65
अमरुद	15.88
आम	9.16
सेब	10.39
अंगूर	8.63
पपीता	6.70
केला	7.76

अनाजों से सम्बंधित अधिकांश हानि प्रमुख रूप से कटाई ,एकत्रण व मंड़ाई के दौरान खेत स्तर पर होती है जोकि भंडारण के कारण केवल 0.75 से 1.21:% ही हानि होती है| तालिका से स्पस्ट है कि अनाजों की तुलना में फलों में अधिक बर्बादी होती है जोकि मुख्यतया प्रसंस्करण सुविधाओं की कमी के कारण होती है|

संभावनायें

विश्व के खाद्यान्न उत्पादन में प्रमुख स्थान प्राप्त होने के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में रोज़गार सृजन एवं विकास की असीम संभावनायें हैं| कृषि में आधारभूत संरचना विकास ,कुशल मानव शक्ति ,प्रसंस्करण की कुशल तकनीक एवं खाद्यान्नों में होने वाली बर्बादी को कम करके इस उद्योग को अधिक विकसित किया जा सकता है| इस उद्योग के महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय का गठन किया, मंत्रालय द्वारा वर्तमान में इस उद्योग को गति देने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन, मेगा फूड पार्क स्कीम, राष्ट्रीय खाद्य प्रसंस्करण मिशन, मानव संसाधन विकास आदि योजनाओं द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं|

निष्कर्ष

प्रसंस्करण उद्योग प्रमुख रूप से कृषि आधारित उद्योग है एवं देश की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है| कृषि क्षेत्र का सकल मूल्य संवर्धन में 17.4% योगदान है| कृषि क्षेत्र के बढ़ते महत्त्व एवं प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की बढती हुई मांग के कारण प्रसंस्कृत क्षेत्र तीव्र गति से विकसित हो रहा है| उत्पादकता में सुधार,लागत में कमी, कुशल एकत्रीकरण, कुशल विपणन, प्रसंस्करण के लिये कुशल तकनीक आदि मुख्य कारकों पर सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिया जा रहा है| बजट 2018 -19 में सरकार द्वारा नये कृषि प्रसंस्करण वित्तीय संस्थानों की स्थापना को प्रोत्साहित किया गया है| भारत की कृषि निर्यात क्षमता वर्तमान के 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 100 बिलियन अमेरिका डॉलर तक पहुँचने की है इस क्षमता को प्राप्त करने के लिए आधारिक संरचना में निवेश, वित्तीय सहायता, मेगा फूड पार्कों में अत्याधुनिक परीक्षण सुविधाएँ आदि प्रदान की जा रही है| अतः स्पस्ट है कि वर्तमान में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एक उभरता हुआ उद्योग है|

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

संदर्भ सूची

[1]. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट, 2018-19.

[2]. कृषि,सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट, 2017-18.

[3]. वार्षिक आर्थिक सर्वेक्षण 2016-17.

[4]. वेबसाइट- www.apeda.gov.in.

[5]. www.ciphet.in.

[6]. www.ibef.org.

[7]. www.jagranjosh.com.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**